Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

8. भारतीय स्वाधीनता संग्राम में बुंदेली लोक साहित्य का योगदान

गौरव चौहान
शोधार्थी, जनसंचार विभाग
म.गां.अं.हिं.वि.वर्धा,(महाराष्ट्र)
Email -chouhangourav00@gmail.com

शोध सारांश

बुंदेलखंड की ग्रामीण जनता से जुड़े तथा उसकी रागात्मक भावनाओं को सहज ढंग से महसूस करने वाले लोक साहित्यकारों ने लोकमानस में उमड-घुमड़ रही क्रांतिकारी भावनाओं को समय-समय पर वाणी दी है। अनेक लोक साहित्यकार जनता के प्रतिनिधि बनकर स्वाधीनता संघर्ष में कूदे थे और इन्होंने शहीदों तथा देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सबकुछ कुर्बान करने वाले क्रांतिकारियों का यशोगान करके ग्रामीण जनता को क्रांति का संदेश दिया था। स्वाधीनता संग्राम के दौरान बुंदेलखंड की ग्रामीण महिलाएं मांगलिक अवसरों पर राष्ट्रीय लोकगीत गाती थी। बुंदेलखंड सहित भारत के विभिन्न सांस्कृतिक अंचलों में प्रचलित फाग, कजरी, मल्हार, आल्हा, बिरहा, रागिनी, लावनी आदि परंपरागत लोक माध्यमों ने शोषक एवं आततायी ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विरोध का स्वर मुखर किया था। लोक साहित्य से जुड़े रचनाकारों ने नवजागरण का संदेश देने वाले राष्ट्र पुरुषों,समाज-सुधारकों एवं स्वतंत्रता सेनानियों का भी गौरवगान किया था प्रस्तुत शोध में भारतीय स्वाधीनता संग्राम में बुंदेली लोक साहित्य के योगदान का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द : स्वाधीनता संग्राम, बुंदेलखंड, लोक साहित्य, सांस्कृतिक संचार, लोकगीत

प्रस्तावना

भारत के स्वाधीनता संग्राम की गिनती आधुनिक समाज के सबसे बड़े आंदोलनों में की जाती है शायद इसलिए विश्व के इतिहास में भारतीय स्वाधीनता संग्राम का स्थान अद्वितीय है। भारत के विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में रहने वाले करोड़ों लोगों को स्वाधीनता आंदोलन ने राजनीतिक रूप से सक्रिय होने के लिए प्रेरित किया और शक्तिशाली औपनिवेशिक साम्राज्य को घुटने टेकने के लिए विवश किया। देखा जाए तो भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के कई पहलू हैं पर उनमें खास तौर पर बुंदेलखंड एवं बुंदेली लोक साहित्य के योगदान को नए सिरे से समझने की आज ज़रूरत है। "भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक ढाँचे की वास्तविक ऐतिहासिक मिसाल पेश करता है। अपने तरह का यह एक एकमात्र आंदोलन है जिसमें नैतिक, राजनैतिक और विचारधारात्मक, तीनों ही स्तरों पर लंबे जनसंघर्ष

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

चलाकर सफलता प्राप्त की गई।[1]" अगर हम बुंदेलखंड क्षेत्र की बात करें तो "बुंदेलखंड मध्य भारत का एक प्राचीन क्षेत्र है इसका प्राचीन नाम जेजाकभुक्ति है तथा इसका विस्तार उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश में है। बुंदेली इस क्षेत्र की मुख्य बोली है। भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं के बावजूद बुंदेलखंड में जो एकता और समरसता है उसके कारण यह क्षेत्र अपने आप में सबसे अनूठा बन पड़ता है।[2]" बुंदेलखंड की अपनी अलग ऐतिहासिक,सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत है। बुंदेली माटी में जन्मी अनेक विभूतियों ने न केवल अपना बल्कि इस अंचल का नाम खूब रोशन किया और इतिहास में अमर हो गए। महान चन्देल शासक बिधाधर चन्देल, आल्हा-ऊदल, खेतसिंह खंगार, महाराजा छत्रसाल बुंदेला, गोस्वामी तुलसीदास, राजा भोज, ईसुरी, कवि पद्माकर, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई आदि अनेक महान विभूतियाँ इसी क्षेत्र से संबद्ध हैं। बुंदेलखंड में सच्ची सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक एकता है डॉ.नर्मदा प्रसाद गुप्त ने अपनी पुस्तक बुंदेलखंड की लोक संस्कृति का इतिहास में लिखा है कि "अतीत में बुंदेलखंड शबर, कोल, किरात, पुलिंद और निषादों का प्रदेश था। आर्यों के मध्यदेश में आने पर जन-जातियों ने प्रतिरोध किया था। वैदिक काल से बुंदेलों के शासनकाल तक दो हज़ार वर्षों में इस प्रदेश पर अनेक जातियों और राजवंश ने शासन किया है और अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना से इन जातियों के मूल संस्कारों को प्रभावित किया है। विभिन्न शासकों में मौर्य, सुंग, शक, हुण, कुषाण, नाग, वाकाटक, गुप्त, कलचुरी, चन्देल, खंगार, बुन्देला, मराठा और अंग्रेज मुख्य हैं।[3]" विद्वानों के अनुसार बुंदेलखंड में राष्ट्रीय आंदोलन का सामाजिक दायरा बहुत फैला हुआ था और इसमें ज़मीदार, ग्रामीण जनता तथा शहरी निम्नमध्यवर्ग के लोग शामिल हुए थे। बुंदेलखंड में पहली बार औरतें घर से बाहर निकलीं, प्रदर्शन में हिस्सा लेने लगीं, धरने पर बैठ गयीं। यही वह समय था जब पहली बार बुंदेलखंड का मजदूर अपने जीवन की आर्थिक कठिनाइयों को राजनैतिक स्तर पर ले आया था।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत अध्ययन के लिए बुंदेली लोक साहित्य से संबंधित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं और शोधपत्रों से द्वितीयक सामग्री प्राप्त की गई है एवं लोक साहित्य के जानकारों से भी बात की गई है।

लोक साहित्य का महत्त्व : लोक साहित्य के अंतरगत लोकगीतों, लोक नाट्यों, लोक गाथाओं एवं लोक कथाओं में लोक की सामूहिक चेतना की पुकार दिखाई देती है। लोक साहित्य में हमारी मूल संस्कृति एवं विरासत के दर्शन होते हैं। यह बात सर्वविदित है कि जन सामान्य का अपना साहित्य होता है जिनमें उसकी जीवनानुभूति की अभिव्यंजना होती है। जीवन की प्रत्येक अवस्था यानी जन्म से लेकर मृत्यु तक में लोक साहित्य समयानुकूल भावनाओं को अभिव्यक्ति देता है।

[1] चन्द्र,विपिन.मुखर्जी ,मृदुला .मुखर्जी,आदित्य .पानिकर,क.न. महाजन,सुचेता. (1990), "*भारत का स्वतंत्रता संघर्ष*" ,दिल्ली : हिन्दी माध्यम कार्यन्वय निदेशालय दिल्ली

[2] यादव,कौशलेन्द्र प्रताप."*आल्हा-ऊदल और बुंदेलखंड*".मेरठ :प्रगति प्रकाशन मेरठ

[3] https://nishadhistory.blogspot.com/2017/09/blog-post.html

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में लोक साहित्य की भूमिका : स्वतंत्रता संग्राम में लोक साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। लोक साहित्य ने जनमानस को संघर्ष हेतु प्रेरित करने के साथ ही स्वाधीनता आंदोलन को शक्ति प्रदान की। परतंत्र भारत में स्वाधीनता आंदोलन से संबंधित लोकगीत, लोक नाटय, लोक गाथाएं एवं लोकोक्तियां हमारे पूर्वजों के अलिखित दस्तावेज हैं, जिन्हें सुनकर आज भी हमें अभूतपूर्व सुख की अनुभूति होती है। विद्वानो के अनुसार स्वतंत्रता में तलवार के साथ-साथ लोक साहित्य की तेज धार ने भारतीय जनता में उत्साह भरने के साथ-साथ उन्हें उद्वेलित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम और बुंदेलखंड : किसी भी क्षेत्र के विकास में उस क्षेत्र की संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है "बुंदेलखंड में अतीत काल से ही आजादी की रक्षा करने वाले वीर योद्धाओं और की शानदार परंपरा रही है। इस गौरवशाली परंपरा को वीरांगना झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने आजादी की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर उसे और अधिक प्रज्जवलित और प्रखर बनाए रखा[4]" यह बात ऐतिहासिक रूप से सच है कि "भारत की आजादी के प्रथम संग्राम की ज्वाला मेरठ की छावनी में भड़की थी। किन्तु इन ऐतिहासिक तथ्यों के पीछे एक सचाई गुम है, वह यह कि आजादी की लड़ाई शुरू करने वाले मेरठ के संग्राम से भी 15 साल पहले बुंदेलखंड की धर्मनगरी चित्रकूट में एक क्रांति का सूत्रपात हुआ था। पवित्र मंदाकिनी के किनारे गोहत्या के खिलाफ एकजुट हुई हिंदू-मुस्लिम बिरादरी ने मऊ तहसील में अदालत लगाकर पांच फिरंगी अफसरों को फांसी पर लटका दिया। इसके बाद जब-जब अंग्रेजों या फिर उनके किसी पिछलग्गू ने बुंदेलों की शान में गुस्ताखी का प्रयास किया तो उसका सिर कलम कर दिया गया। इस क्रांति के नायक थे आजादी के प्रथम संग्राम की ज्वाला मेरठ के सीधे-साधे हरबोले। संघर्ष की दास्तां को आगे बढ़ाने में बुर्कानशीं महिलाओं की 'घाघरा पलटन' की भी अहम हिस्सेदारी थी। आजादी के संघर्ष की पहली मशाल सुलगाने वाले बुंदेलखंड के रणबांकुरे इतिहास के पन्नों में जगह नहीं पा सके, लेकिन उनकी शूरवीरता की तस्दीक फिरंगी अफसर खुद कर गये हैं। अंग्रेज अधिकारियों द्वारा लिखे बांदा गजट में एक ऐसी कहानी दफन है, जिसे बहुत कम लोग जानते हैं। गजेटियर के पन्ने पलटने पर मालूम हुआ कि वर्ष 1857 में मेरठ की छावनी में फिरंगियों की फौज के सिपाही मंगल पाण्डेय के विद्रोह से भी 15 साल पहले चित्रकूट में क्रांति की चिंगारी भड़क चुकी थी।[5]" सन् 1857 ई. में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध भारतीयों द्वारा पहली बार संगठित एवं हथियार बंद लड़ाई और संघर्ष का रास्ता अपनाया गया किन्तु किन्हीं कारणों से यह विप्लव असफल रहा, परन्तु इस संग्राम ने प्राचीन और सामंतवादी परम्पराओं को तोड़ने में पर्याप्त सहायता पहुँचायी तथा इसके बाद ही भारत आधुनिक स्वतंत्रता संघर्ष आन्दोलन के नये युग में प्रवेश कर सका। विद्वानों के अनुसार भारतीय स्वाधीनता संग्राम में बुंदेला विद्रोह सबसे पहले 1842 ई. में हुआ था जिसने अंग्रेजों की नींद उड़ा दी थी। सागर जिले के बलेहा गांव से 44 की संख्या में लोगों ने आजादी की लड़ाई

[4] उपाध्याय,विश्वमित्र."(1997)."*लोकगीतों में क्रांतिकारी चेतना* ".दिल्ली : प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय दिल्ली

[5] https://www.teenbattinews.com/2021/08/1842.html

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

में भागीदारी की 1921 ई. में सागर में रतौना कसाईखाना के आंदोलन ने बुंदेलखंड को देशव्यापी पहचान दी। इसकी सूचना जब पंडित माखनलाल चतुर्वेदी को मिली तो अपनी यात्रा अधूरा छोडक़र वे सागर आए थे और इस आंदोलन के संदर्भ में उनका पत्र 'कर्मवीर' लगातार लेख प्रकाशित करता था। विद्वानों के अनुसार "बुन्देलखण्ड अपनी स्वतंत्र चेतना के लिये महत्वपूर्ण माना जाता है। बुन्देलखण्ड का भूखण्ड अपनी अदम्य प्रेरणाओं और स्वतंत्र प्रवृत्तियों के लिये प्राचीन काल से ही विशिष्ट है। मध्यकाल में महाराज छत्रसाल बुन्देला ने इस क्षेत्र के सुयश को आगे बढ़ाया। जिससे इसे बुन्देलखण्ड नाम दिया। चंदेलों और बुंदेलों की संतानों का शौर्य सन् 1857 ई. के स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में पराक्रम एवं स्वतंत्रता की कामना के साथ ज्वलंत रूप से सामने आया जब तात्या टोपे, झलकारी बाई, मातादीन भंगी और नत्थू धोबी के सुयोग्य नेतृत्व में अंग्रेजों से युद्ध करते हुये भारतीय इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जोड़ा गया। बुंदेलखंड सहित सम्पूर्ण भारतवर्ष में राष्ट्रीय चेतना पूर्णरूप से सन् 1857 ई. तथा सन् 1921 ई. की अवधि के दौरान पुष्पित हुई और परवर्ती कालीन स्वतंत्रता आंदोलन जिसे हम राष्ट्रीय आन्दोलन की संज्ञा देते हैं जो सन् 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्म के साथ ही सुगठित रूप में सामने आया और जिसके नेतृत्व में भारतवासियों ने विदेशी शासन से स्वतंत्रता के लिये लम्बा और ऐतिहासिक संघर्ष किया। इस कालावधि के संघर्ष में बुंदेलखंड सक्रिय रूप से भाग ले रहा था। सन् 1905 ई. में बंग भंग के विरुद्ध आन्दोलन में बुंदेलखंड ने अपनी जुझारू प्रवृत्ति का परिचय दिया। सन् 1905 ई. से 1911-12 तक और सन् 1921 ई. से सन् 1930-31 ई. तक के आन्दोलनों में बुंदेलखंड में क्रान्तिकारी आन्दोलन के स्वर अधिक मुखर हुए। चन्द्रशेखर आजाद और भगवानदास माहौर जैसे क्रांन्तिकारियों के नेतृत्व में बुन्देलखण्ड ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। बुन्देलखण्ड की इस प्रकृति और प्रवृत्ति की धारा में सन् 1921 ई. के असहयोग आन्दोलन के आह्वान पर अनेक वीर युवक सामने आये।[6]" सन् 1928 ई. में साइमन कमीशन के विरोध में और सन् 1930 ई. के सत्याग्रह आन्दोलन में भारी संख्या में बुन्देलखण्ड के शिक्षित युवकों ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई लड़ी। सन् 1931 ई. से सन् 1940 ई. के मध्य महात्मा गाँधी और पं. जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में बुन्देलखण्ड ने आजादी की राजनीतिक लड़ाई में बड़े उत्साह से भाग लिया, जेल यात्रायें की और पुलिस का दमन सहा। सन् 1942 ई. में भारत छोड़ो आन्दोलन में बुंदेलखंड की साधारण जनता ने गांधी जी के आह्वान पर शासन से अहसयोग किया।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम और बुंदेली लोक साहित्य : मनुष्य अपने जीवन में सुख-दु:ख का जो अनुभव करता है, अपने परिवेश तथा प्रकृति में जो कुछ देखता है, उससे सहज रूप में उत्पन्न भावों को वह अ पनी वाणी तथा हाव-भाव से अभिव्यक्त करता है। साधारण जन अपने मस्तिष्क और हृदय पर प्रभाव डालने वाली घटना के बारे में गाकर, नाचकर या रोकर अपनी रागात्मक भावनाओं को प्रकट करते हैं। "मानव आदिकाल से अपनी रागात्मक भावनाओं की भाषागत अभिव्यक्ति गीतों, कहानियों, उक्तियों आदि के द्वारा करता आया है। जन साधारण की यह स्वाभाविक

[6]https://www.thecampusnews.com/2021/08/bundelkhandglory.html#google_vignette

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

भाषागत अभिव्यक्ति ही लोक साहित्य है।[7]" विद्वानों के अनुसार लोकसाहित्य के अंतर्गत लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है लोकगीत मूलतः सामुदायिक रचनाएं हैं। इनका सर्जक कलाकार एक व्यक्ति नहीं, बल्कि पूरा लोक समाज होता है। समूची जाति ही लोकगीतों की उद्भावना और पोषण का आधार होती है। एक विशिष्ट व्यक्ति या व्यक्तियों की वाणी ही धीरे-धीरे लोकवाणी बन जाती है। उसमे क्रमशः नए अंश जुड़ जाते है और उसमें यदि कोई असामाजिक तत्व होता है तो उसका परिष्कार कर दिया जाता है। इस प्रकार लोकगीत अंततोगत्वा एक सामूहिक और सामाजिक रचना है, जिसका विशिष्ट गुण गेयता है। साधारण ग्रामीण जनता के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक लोकगीत व्याप्त रहते है। बच्चे के जन्म पर सोहर गाकर प्रसन्नता प्रकट की जाती है। विवाह के हर अनुष्ठान के समय महिलाएं गीत गाकर सुखद वातावरण उत्पन्न करती है तथा हास-परिहास करती है। वर्षा ऋतु में कजरी, फागुन में फाग' और चैत में 'चैता' गाकर साधारण जनता आनंदित होती है। बड़े-बूढ़े भी निर्गुन गाकर अपने मन को शांत करते हैं। इस प्रकार लोकगीत जीवन में रमे रहते हैं। ये लोकगीत मनोरजन करने के साथ-साथ शिक्षा देते हैं तथा परिवार, समाज और देश के प्रति कर्तव्यबोध कराते हैं। यही नहीं, बल्कि लोकगीतकार वीर पुरुषों और शहीदों के शौर्य व बलिदान का गौरवगान करके देशप्रेम की भावना भी जगाते हैं।

स्वतंत्रता संग्राम और लोक साहित्य के अंतर्गत बुंदेली लोकगीत : हमारे देश के स्वाधीनता संग्राम के दौरान लोकगीतकार अपने ओजस्वी एवं देशभक्तिपूर्ण गीत गा-गाकर हजारो व्यक्तियों में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करते थे। भारत का स्वाधीनता आंदोलन हमारे देश की जनता का महान राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष था। अंग्रेजों की 'ईस्ट इंडिया कंपनी' ने भारत की जनता में फूट डालकर तथा छल-कपट करके अपनी शक्ति बढ़ाई। उन्होंने भारत के राजाओं और नवाबों को आपस में लड़वाया और कभी एक पक्ष तो कभी दूसरे पक्ष की मदद करके स्वयं बंदर बांट की। भारत में ब्रिटिश शासन का प्रारंभ सन् 1757 ई. से माना जा सकता है, जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कपनी की सेना ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को प्लासी की द्वितीय लड़ाई में परास्त करके अपने राज्य का विस्तार करना शुरू किया। अग्रेजों ने छल-कपट, पैशाचिक हिंसा तथा बर्बर-बल प्रयोग कर उन्नीसवीं सदी के अंत तक समूचे भारत पर अधिकार करके उसे अपना उपनिवेश बना लिया था। "ब्रिटिश पूंजीपतियों, व्यापारियों तथा गोरे शासकों ने भारत की संपदा को लगभग दो सौ वर्षों तक लूटा। उन्होंने भारतीय किसानों, आदिवासियों, मजदूरों, कारीगरों तथा बुद्धिजीवियों का निर्मम शोषण किया। किसानों व आदिवासियों की भूमि छीनी गई और उनके ऊपर जालिम जमींदारी प्रथा लाद दी गई। ईस्ट इंडिया कंपनी ने भू-राजस्व में कमरतोड़ वृद्धि की। इस अवधि में जनता को अकालों व महामारियों का सामना करना पड़ा।[8]" भारत में ब्रिटिश शासन का स्वरूप औपनिवेशिक, शोषक तथा आतंकवादी था। ब्रिटिश शासन के प्रारंभिक दिनों से ही भारत के किसानों, खेत मजदूरों, आदिवासियों, कारीगरों, जमींदारों, पदच्युत सामतों, सैनिकों और बुद्धिजीवियों ने

[7] उपाध्याय,विश्वमित्र."(1997)."*लोकगीतों में क्रांतिकारी चेतना* ".दिल्ली : प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय दिल्ली

[8] सिंह,ओंकार प्रसाद.(1987)."*स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास* " .*दिल्ली :दिल्ली प्रसाशन*

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

अपने खेत-खलिहान, नदी-नाले, वन-पर्वत, उर्वर भूमि तथा परम्परागत उद्योग व व्यापार की रक्षा के लिए संघर्ष किए। अंग्रेजों ने भारत के किसी भी क्षेत्र या प्रदेश पर सरलतापूर्वक कब्जा नहीं कर लिया था। हर क्षेत्र की जनता ने अपनी धन-धरती तथा साधनों व सम्मान की रक्षा के लिए हथियार उठाए थे। पराधीनता से पूर्व हर क्षेत्र की धरती पर हमारे देश के स्वतंत्रता प्रेमी योद्धाओं का रक्त बहा था। ब्रिटिश शासन के प्रारंभिक सौ वर्षों में अनेक स्थानीय और परंपरागत विद्रोह हुए। इन विद्रोहों की चरम परिणति सन् 1857 ई. की क्रांति में हुई। यह क्रांति हर दृष्टि से भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम थी। इसने ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी थी। इस क्रांति की व्यापकता, इसमें आम जनता की क्रांतिकारी भागीदारी तथा दावानल की तरह बढ़ रही सशक्त क्रांतिकारी जनचेतना ने ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की नींद हराम कर दी थी। सन् 1857 की यह महान जनक्रांति भारत के राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान क्रांतिकारियों की ही नहीं, बल्कि अन्य स्वाधीनता सेनानियों की प्रेरणा स्रोत बनी रही और बुंदेलखंड के लोककवियों ने समय-समय पर इस चेतना को वाणी दी। अधेय्ताओं के अनुसार जैतपुर के युवराज पारीछत ने सन् 1840-42 तक आक्रमणकारी अंग्रेजों से घमासान युद्ध किया था। सन् 1857 की क्रांति से पूर्व लड़े गए इस युद्ध में पारीछत ने जिस देशप्रेम, शौर्य व रणकौशल का परिचय दिया, उससे स्वतंत्रता प्रेमी भारतीय जनता का सिर ऊंचा हो जाता है। पारीछत के अदम्य साहस और उनके देशप्रेम से प्रभावित लोकगीतकारों ने अनेक लोकगीतों की रचना की। ये लोकगीत सन् 1857 की क्रांति से पूर्व हरबोलों द्वारा गाए जाते थे। सन् 1857 की क्रांति के बाद हुए भयंकर दमन के कारण संभवतः ये लोकगीत कुछ दब से गए। परंतु क्रांति के बाद भी कहीं-कहीं ये गाए जाते रहे। लोक साहित्य के गंभीर अधेयता डॉ. नर्मदाप्रसाद गुप्त ने युवराज पारीछत से संबंधित कई लोकगीतों का संकलन करके उनकी समालोचना की है। उदाहरण के लिए युवराज पारीछत की शौर्यगाथा का वर्णन करने वाला एक बुंदेली लोकगीत इस प्रकार है :

"अरी कुमोदनी तू कैसी रै गे बंद बेला में।
चरखारी फूली केतकी, बां
दा में फूलो गुलाब बीच बेला में फूली कुमोदनी,
संभू तोखा देउँछड़ाय।[9]"

विद्वानों के अनुसार स्वाधीनता सेनानियों और लोकगीतकारों ने एक-दूसरे के लिए पूरक का कार्य किया। बुंदेलखंड के लोकगीतकारों ने स्वाधीनता आंदोलन से संबंधित जिन लोकगीतों की रचना की और जिन लोकगीतों को सुनाकर हजारों स्वाधीनता सेनानियों को मुक्ति सघर्ष की ओर प्रेरित किया वे हमारे राष्ट्रीय लोक साहित्य की अमूल्य निधि हैं। जैसे महात्मा गांधी को केंद्र में रखकर लिखा गया यह लोकगीत :

"चल चल चक्र सुदर्शन मोरे
चल चल चरखा चल रे

[9] उपाध्याय,विश्वमित्र."(1997)."*लोकगीतों में क्रांतिकारी चेतना* ".दिल्ली : प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय दिल्ली

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

गाँधी के सपनन के डोरे
चल चल चरखा चल रे
गाँधी ने सुराज के काजें
ऐसो अलख जलाओ
ई चरखा के तार तार में
अपनो मंत्र भराओं
देस छोड़ जैहें जे गोरे
चल चल चक्र सुदर्शन मोरे
चल चल चरखा चल रे"

1857 ई. से लेकर 1947 ई. तक भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन जनता का महान मुक्ति संघर्ष था। इसमें हजारों स्वाधीनता प्रेमी शहीद हुए और लाखों ने कारावास की यातनाएं भोगी। इन स्वाधीनता सैनिकों ने भारत की जनता की राजनीतिक स्वतंत्रता तथा आर्थिक-सामाजिक शोषण से मुक्ति के लिए संघर्ष किया। भारत की जनता की पीड़ा को समझते हुए बुंदेलखंड के लोक गीतकारों ने लिखा:-

"चलने दो हथ निहत्थों पर जत्थों पर जत्थे आवेंगे
गाँधी के इशारे पर लाखों मत्थे चढ़ जावेंगे
तोड़ो कानून किताबों का छापे खाने आखबारों का
इस अनाचार के शासन को हाथों –हाथों चढ़ जावेंगे
चलने दो हथ निहत्थों पर जत्थों पर जत्थे आवेंगे"

निष्कर्ष : बुंदेली लोक साहित्य के अंतर्गत आने वाले अनेक बुंदेली लोकगीतों ने हजारों स्वाधीनता प्रेमियों को प्रोत्साहित किया। स्वाधीनता संग्राम ने लोक साहित्य को और लोक साहित्य ने स्वाधीनता संग्राम को बल दिया और आगे चलकर यह मुक्ति सग्राम एक जन-आंदोलन के रूप में उभरा। इस जन-आंदोलन की सफलता के फलस्वरूप भारत स्वाधीन हुआ और उसके विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। लोक साहित्य से जुड़े लोककवियों ने समय-समय पर अपनी रचनाओं से स्वाधीनता सेनानियों को प्रोत्साहित किया और स्वाधीनता सेनानियों ने लोककवियों व लोकगीतकारों को प्रभावित किया। बुंदेलखंड सहित भारत के अन्य सांस्कृतिक क्षेत्रों के लोकसाहित्य ने स्थानीय एवं राष्ट्रीय नेताओं के संघर्षों, यातनाओं और उनकी शहादतों का गौरवगान किया है।

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

संदर्भ सूची

1. पाण्डेय,मुन्ना (सं).(2016). *"संस्कृति विविध परिप्रेक्ष्य"*. दिल्ली : अनन्य प्रकाशन
2. चन्द्र,विपिन.(2019). *"आधुनिक भारत का इतिहास"* दिल्ली : ओरियंट ब्लैक स्वान प्राइवेट लिमिटेड
3. चन्द्र,विपिन(2009). *"भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन"* दिल्ली : अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर प्राइवेट लिमिटेड
4. दुबे,आरती. (2017). *"बुंदेली"*.दिल्ली:साहित्य अकादमी
5. सिंह,अयोध्या.(2012). *"भारत का मुक्ति संग्राम"*. दिल्ली : प्रकाशन संस्थान
6. सिंह,शरद (2015). *"बुंदेली लोक कथाएं"*. दिल्ली : साहित्य अकादमी
7. अग्रवाल,बालमुकुंद(1995)."*आज़ादी के मुकदमे"*. दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास
8. चन्द्र,विपिन.मुखर्जी ,मृदुला .मुखर्जी,आदित्य .पानिकर,क.न. महाजन,सुचेता. (1990), "*भारत का स्वतंत्रता संघर्ष*" ,दिल्ली : हिन्दी माध्यम कार्यन्वय निदेशालय दिल्ली
9. यादव,कौशलेन्द्र प्रताप."*आल्हा-ऊदल और बुंदेलखंड*".मेरठ :प्रगति प्रकाशन मेरठ
10. उपाध्याय,विश्वमित्र."(1997)."*लोकगीतों में क्रांतिकारी चेतना* ".दिल्ली : प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय दिल्ली
11. सिंह,ओंकार प्रसाद.(1987)."*स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास*" .*दिल्ली :दिल्ली प्रसाशन*
12. https://www.thecampusnews.com/2021/08/bundelkhandglory.html#google_vignette
13. https://www.teenbattinews.com/2021/08/1842.html
14. https://nishadhistory.blogspot.com/2017/09/blog-post.html
15. https://ignited.in/I/a/305996